3 गोभी का फूल

पाठ-परिचय

प्रस्तुत **हास्य-व्यंग्य कथा** हिंदी जगत के प्रसिद्ध रचनाकार श्री केशव चंद्र वर्मा द्वारा लिखित है। हमारे समाज में हनुमान प्रसाद जी जैसे व्यक्ति सदा दूसरों को हिदायत भी देते हैं और अपना काम भी निकाल लेते हैं। ऐसे लोगों के कारण ही लेखक जैसे भोले-भाले लोग ख़मियाजा भुगतते हैं।

आप तो बाबू हनुमान प्रसाद से अनभिज्ञ हैं, पर बाज़ार के सभी सब्ज़ी बेचने वाले उनसे भली प्रकार परिचित हैं। घर की साग-सब्ज़ी वे ही रोज़ बाज़ार से खरीदकर ले जाते हैं। हरे धनिए की गड्डी दस पैसे या तीस पैसे की तीन लेना, शलज़म के पत्ते तोड़कर तोलने का आग्रह करना, आलू छाँट-छाँटकर चढ़वाना, सड़ा कुम्हड़ा दूसरे दिन कटा हुआ वापस करना और अरवी धुलवाकर, मिट्टी हटाकर लेना आदि उनकी ऐसी अनेक बातें हैं जिनके कारण सब्ज़ी मंडी का हर कुँजड़ा उन्हें पहचानता है। सब कुँजड़े उन्हें देखकर 'आइए बाबू जी' का नारा लगाते हैं, पर मन से कोई नहीं चाहता कि वे उसकी दुकान पर ही उस दिन के बाज़ार का व्रत तोड़ें क्योंकि बहुत देर तक उसे हिसाब लगाना पड़ता है कि सौदे के बाद घाटे में आखिर कौन रहा।

हनुमान प्रसाद जी को हरी सब्ज़ी का मर्ज़ है। सारे संसार में यदि किसी वस्तु को वे आदि कारण मानते हैं, तो वह है — हरी सब्ज़ी। किसी भी विषय पर आप उनसे बात चलाएँ, पर अंत में इसी विश्वास के साथ उठेंगे कि हर समस्या का हल हरी सब्ज़ी में छिपा पड़ा है। किस सब्ज़ी में कितने विटामिन होते हैं — कितना लोहा, कितना चूना, कितना कत्था, कितनी लकड़ी, कितना ईंटा कितना गारा वग़ैरहा होता है — इसका जैसा विशद ज्ञान उनको है, वैसा किसी पोस्टमास्टर को अब तक निकले हुए डाक-टिकटों के बारे में भी न होगा।

शामत के मारे उस दिन मुँह से निकल पड़ा कि मैं लखनऊ जा रहा हूँ। छूटते ही हनुमान प्रसाद बोले, "अरे भई वर्मा साहब, आप लखनऊ जा रहे हैं, तो हमारे लिए चार फूलगोभी लेते आइएगा। अभी यहाँ गोभी का अच्छा फूल मिलता नहीं। सुना है, लखनऊ में बीस-बीस पैसे में अच्छे फूल मिल जाते हैं।"

मैंने 'हाँ' या 'ना' कहा हो, इसके पहले ही उन्होंने अस्सी पैसे मेरे हाथ पर रख दिए और मुझे अकेले में ले जाकर बोले, "देखिए वर्मा जी, पता नहीं आपने कभी शाक-सब्ज़ी खरीदी है कि नहीं। फूल ज़रा गठा हुआ लीजिएगा। बिखरा हुआ फूल जल्दी खराब हो जाता है। और देखिए, अकसर उस पर झाँईं पड़ जाती है, यह न रहे। बहुत-से गोभी वाले पत्ते निकाल लेते हैं, वे पत्ते न निकालने पाएँ, पूरी गोभी लीजिएगा। पत्ते में जो कैलोरी होती है, वह फूल में तो होती ही नहीं। पत्तों के डंठल का अचार बड़ा अच्छा होता है। उसकी सब्ज़ी तो आपने खाई ही न होगी। लौटकर आइए, तो खिलाऊँ। ज़रा-सी मद्धिम आँच पर पावभर पानी में उबालकर नमक-मिर्च डालकर खाइए, तो देखिए लाल-लाल कल्ले निकल आएँगे।"

वे किसी भी सब्ज़ी के बारे में बहुत कुछ कह सकते थे। मैं इसलिए चुप था। वे साँस लेकर फिर बोले, "अच्छा सुनिए, फूल में कभी-कभी छोटे-छोटे कीड़े लग जाते हैं — उसे ज़रा झड़वाकर लीजिएगा। पानी में भीगा हुआ फूल न लीजिएगा। बड़ी जल्दी खराब हो जाता है। अच्छे गोभी के फूल में, कच्चा हो तो भी; विटामिन डी, ए, बी काफी रहता है।"

मैंने उन्हें याद दिलाया कि यदि मैं गोभी के फूल का पूरा माहात्म्य सुनकर गया, तो गाड़ी छूटेगी, नौकरी छूटेगी और गोभी का फूल भी छूट जाएगा। सब पर संकट की बात सुनकर हनुमान प्रसाद ने मुझे छोड़ दिया।

हज़रतगंज, सिनेमा, नुमाइश, कॉफ़ी हाउस — सब कुछ छोड़कर मैं लखनऊ की तरकारी मंडी में घुसा। तरकारी वाले तीस पैसे से नीचे उतरने को तैयार न थे, पर मुझे बीस-बीस पैसे वाले ही फूल चाहिए थे — पूरे पत्ते वाले, जिनके डंठल का अचार बन सके, जिनके खाने से लाल-लाल कल्ले निकल आएँ। लौटने का वक्त हो आया। मंडी वाले ने बीस पैसे पर उतरने के लिए हामी न भरी। हारकर, तीस-तीस पैसे के ही भाव से गोभी के फूल खरीदे। चार फूल उनके वास्ते लिए और सोचा अगर ये इतने नायाब हैं, तो दो-चार अपने लिए भी ले लूँ।

प्लेटफ़ार्म पर हाथ में एक अदद खूबसूरत अटैची के साथ एक झाबा गोभी के फूल को लेकर सफ़र करने वाला मैं अपने ढंग का अकेला ही मुसाफ़िर दिखाई पड़ रहा था। टिकट चेकर दो बार पास से गुज़रा। मुझसे तो नहीं, पर कुली से पूछ गया कि सामान बुक करवा लिया है या नहीं। दो-एक परिचित चेहरे दिखाई पड़े। बोले, "कहिए, दावत कब है?" सँजीदगी से जवाब देता हुआ मैं प्लेटफ़ार्म पर बढ़ती भीड़ और अपने गोभी के झाबे को देख रहा था। कुली चढ़ाने का आश्वासन दे रहा था, पर एक रुपया इनाम चाहता था। मैं चाहता था कि गाड़ी आ जाने पर ही 'हाँ' या 'ना' करूँ।

गाड़ी आई। ठसाठस भरी हुई मेल। गाड़ीवालों और बैलगाड़ी वालों का वर्ग-संघर्ष। अंततः दृश्य में कुछ शांति हुई। धीरे-धीरे लोग पानी के लिए डिब्बे से बाहर निकले। मेरे कुली ने 'अब न चूक चौहान' की तरह मुझे ललकारा। मैं भीतर घुसने लगा। भीतर वाले मुझे दूसरे डिब्बे में खाली जगह के बारे में अतिरिक्त जानकारी के साथ रेलवे के सारे कानून एक साथ समझाने पर तुल गए। पर 'हया' नामक वस्तु मैं प्लेटफ़ार्म पर छोड़कर ही डिब्बे के भीतर घुसा था। भीतर घुसते ही गोभी के फूलों की चिंता हुई। झाबा पूरी तरह भीतर नहीं आ सकता था। गोभी के फूल धीरे-धीरे करके भीतर आ रहे थे। आखिरी किस्त में दो फूल प्लेटफ़ार्म पर खिसककर डिब्बे के नीचे रेल की पटरी पर पहुँच गए। झाबा भीतर लेने के बाद मैं कुली पर बिगड़ने लगा।

कुली इनाम माँगने पर अटका हुआ था और मैं गिरी हुई गोभी के दाम। 'तू-तू, 'मैं-मैं' बढ़ने लगी। दोनों अपनी-अपनी भाषा में एक-दूसरे को ऊँच-नीच कह रहे थे। अंत में समस्या का शांतिपूर्ण हल निकला — अर्थात् मैंने चार की जगह छह रुपए में छुट्टी पाई।

दूसरे के सामान को लोष्ठवत देखने के लिए अपनी परंपरा में बहुत दिनों से आग्रह है। गाड़ी के भीतर, जब तक उठा ले जाने का मौका न हो, हर आदमी दूसरे का सामान ठीक इसी तरह से देखता है। एक स्वर कहता था, 'साहब, उधर ले जाएँ न।'

दूसरा बोला, "बैंच के नीचे कर दीजिए, बैंच के।" तीसरा ऊपर ले जाने का सुझाव देता। अगर जगह होती, तो डिब्बे के सभी लोगों का सुझाव एक के बाद एक पूरा कर देता। सुझाव बहुतेरे आए, पर कोई भी अपनी जगह से तिलभर भी हिलने को तैयार न था, इसलिए निश्शस्त्रीकरण की तरह गोभी के फूलों की भी समस्या ज्यों-की-त्यों बनी रही। गोभी के फूलों का झाबा वहीं नीचे पड़ा रहा। स्टेशनों पर गाड़ी रुकती रही और लोग उसमें मना करने पर भी उसी तरह घुसते रहे जिस तरह मैं घुसा था। मेरा अकेला कंठ डिब्बा खुलते ही मुझे सुनाई पड़ता था, "बचाइएगा, देखिएगा — हैं-हैं इधर नहीं। इधर गोभी है, गोभी। अरे साहब, यह बंडल उधर डालिए, इधर गोभी है — अरे, ट्रंक उधर ले जाओ जी.....।"

जब तक इलाहाबाद स्टेशन न आ गया, मैं अपनी गोभी के झाबे को जी भरकर देख भी नहीं पाया। भीड़ उस पर छाई रही। इलाहाबाद आने पर ही मैं उसे किसी कदर देख पाया। गोभी के गठे हुए पत्तेदार फूल जनता की इतनी लातें खा चुके थे कि हारे हुए उम्मीदवार की तरह उन्हें पहचानना कठिन लग रहा था।

इतने हमलों के बाद भी कितने विटामिन उनमें शेष बचे हैं, यह मैं उन्हें बाबू हनुमान प्रसाद तक पहुँचाकर मालूम करना चाहता था। पर हिम्मत नहीं पड़ी। यहीं के बाज़ार से पचास-पचास पैसे के फूल खरीदकर, 'लखनऊ के' कहकर उन्हें दे आया हूँ। और उसके बदले में लखनऊ में मिलने वाली सस्ती तरकारी पर उनका एक सारगर्भित भाषण सुनकर अभी लौटा हूँ।

— श्री केशवचंद्र वर्मा

जीवन-परिचय

श्री केशवचंद्र वर्मा हिंदी जगत में हास्य-व्यंग्य विधा को साहित्यिक प्रतिष्ठा दिलाने में अग्रणी रचनाकार रहे हैं। इनका जन्म सन् 1928 ई० में इलाहाबाद में हुआ था। इन्होंने प्रारंभ में 'केशव कालीधर' के नाम से काव्य लेखन का कार्य प्रारंभ किया।

'अफलातूनों का शहर', 'लोमड़ी का मांस', 'मुर्ग छाप हीरो', 'वीणापाणि के कंपाउंड में' आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। संगीत के मर्मज्ञ वर्मा जी ने संगीत से संबंधित भी अनेक पुस्तकों का लेखन किया जिसमें प्रमुख हैं — 'कोशिश संगीत समझने की', 'राग और रस के बहाने' आदि।

साहित्यिक उपलब्धियों के लिए उन्हें अनेक सम्मान मिले।

शब्द-संपदा

अनभिज्ञ = अनजान, अपरिचित। **आग्रह** = अनुरोध। **कुम्हड़ा** = काशीफल। **कुँजड़ा** = सब्ज़ीवाला। **विशद** = विस्तृत। **मर्ज़** = रोग। **शामत** = मुसीबत। **झाँईं** = दाग। **मद्धिम** = धीमी-धीमी। **माहात्म्य** = महिमा, गौरव। **कल्ला** = गाल का भीतरी भाग। **हामी भरना** = हाँ कर देना। **झाबा** = टोकरा। **हया** = शर्म। **लोष्ठवत** = तुच्छ, मिट्टी के ढेले की भाँति। **निश्शस्त्रीकरण** = हथियारबंदी। **कंठ** = गला। **सारगर्भित** = जिसमें सार या तत्त्व हो।

हास्य-व्यंग्य कथा से .....

1. दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए :

क. वर्मा जी को लखनऊ से चार गोभी के फूल लाने को हनुमान प्रसाद ने क्यों कहा?

(i) क्योंकि इलाहाबाद में फूलगोभी नहीं थी। ☐

(ii) क्योंकि इलाहाबाद में फूलगोभी अच्छी नहीं थी। ☐

(iii) क्योंकि लखनऊ में फूलगोभी अच्छी और सस्ती थी। ☐

(iv) क्योंकि लखनऊ की फूलगोभी प्रसिद्ध थी। ☐

ख. गोभी का झाबा देखकर टिकट चेकर ने कुली से क्या पूछा?

(i) यह सामान कहाँ जाएगा? ☐ (ii) यह सामान कौन ले जा रहा है? ☐

(iii) यह सामान बुक करा लिया है या नहीं? ☐ (iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं। ☐

ग. कुली ने वर्मा जी से कितने पैसे लिए?

(i) दस रुपए ☐ (ii) बीस रुपए ☐ (iii) एक रुपया ☐ (iv) छह रुपए ☐

घ. इलाहाबाद स्टेशन आने तक वर्मा जी गोभी के झाबे को जी भरकर क्यों नहीं देख पाए थे?

(i) क्योंकि डिब्बे में यात्रियों की अत्यधिक भीड़ थी। ☐

(ii) क्योंकि डिब्बे में यात्री कम गोभी के झाबे अधिक थे। ☐

(iii) क्योंकि डिब्बे में सामान अधिक भरा हुआ था। ☐

(iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं। ☐

ङ. गोभी के गठे-पत्तेदार फूलों की तुलना लेखक ने किससे की है?

(i) थके हुए उम्मीदवार से। ☐ (ii) हारे हुए उम्मीदवार से। ☐

(iii) थके हुए यात्री से। ☐ (iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं। ☐

2. दिए प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए :

क. कहानी में हनुमान प्रसाद जी की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है?

ख. हनुमान प्रसाद जी ने गोभी खरीदते समय वर्मा जी को कौन-कौन-सी सावधानियाँ रखने को कहा?

ग. लेखक ने लखनऊ में किस भाव से फूलगोभी खरीदी और क्यों?

घ. गाड़ी आने के बाद प्लेटफार्म पर क्या हुआ?

ङ. गोभी का झाबा रेल के डिब्बे के भीतर आने पर लेखक कुली पर क्यों बिगड़ने लगा?

च. गोभी के झाबे को लखनऊ से इलाहाबाद लाने में लेखक को क्या-क्या सुनना पड़ा?

छ. अंत में लेखक ने हनुमान प्रसाद जी को कहाँ की गोभी लेकर दी और क्यों?

3. आशय स्पष्टीकरण :

क. पर मन से कोई नहीं चाहता कि वे उसकी दुकान पर ही उस दिन के बाज़ार का व्रत तोड़ें।

ख. पर 'हया' नामक वस्तु मैं प्लेटफ़ार्म पर छोड़कर ही डिब्बे के भीतर घुसा था।

ग. सुझाव बहुतेरे आए, पर कोई भी अपनी जगह से तिलभर भी हिलने के लिए तैयार न था, इसलिए निश्शस्त्रीकरण की तरह गोभी के फूलों की भी समस्या ज्यों-की-त्यों बनी रही।

4. किसने, किससे कहा?

क. "अरे भई, आप लखनऊ जा रहे हैं, तो हमारे लिए चार फूलगोभी लेते आइएगा।" _____

ख. "पत्तों के डंठल का अचार बहुत अच्छा होता है। उसकी सब्ज़ी तो आपने खाई ही न होगी।" _____

ग. "कहिए, दावत कब है?" _____

घ. "बैंच के नीचे कर दीजिए, बैंच के।" _____

ङ. "बचाइएगा, देखिएगा—हैं-हैं इधर नहीं। इधर गोभी है, गोभी।" _____

भाषा- से.....

1. इन शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

आग्रह विशद हया लोष्ठवत माहात्म्य सारगर्भित।

2. इन शब्दों के पूर्व 'सु' और 'कु' उपसर्ग जोड़कर विलोम शब्द लिखिए :

पुत्र – _____ संगति – _____ योग – _____ विचार – _____

3. वाक्यों में प्रयुक्त वाच्य का नाम लिखिए :

क. मुझसे झूठ नहीं बोला जाएगा। _____

ख. गरिमा ने संतरे खरीदे। _____

ग. चलो, सैर कर आएँ। _____

घ. उसे खूब पीटा गया। _____

ङ. राजा ने राजकुमार को गोद में बैठाया। _____

1. किसी रेलवे प्लेटफ़ार्म के दृश्य का वर्णन कीजिए।
2. सफ़र करते समय किन-किन बातों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। कोई पाँच बातें लिखिए।

_____

_____

_____

_____

_____